RNI/MPHIN/2013/61414

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal
Impact Factor - 6.253

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

नवम वर्ष, षष्ठ अंक जनवरी-फरवरी 2021

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भावयन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

₹ 30

दो गज की दूरी - मास्क है जरूरी

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ग्रह जनित रोग एवं निवारण	डॉ. बह्मानन्द मिश्रा	03
2.	योग और समग्र स्वास्थ्य	डॉ. साधना दौनेरिया	08
3.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर ऑनलाइन....	डॉ. पल्लवी पाण्डे, डॉ. राकेश साहू	12
4.	भगवान् विष्णु के अवतारों का एक विश्लेषण	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	16
5.	मीमांसा परम्परा में 'विध्यर्थ'	डॉ. नीरजा कुमारी	25
6.	'राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020' में भारतीय भाषाओं के उन्नयन हेतु प्रावधान	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	28
7.	प्रतीकोपासना विमर्श	डॉ. मेघराज मीणा	32
8.	राष्ट्रीयता की भावना के विकास में हिन्दी साहित्य का योगदान	डॉ. संजय कुमार	37
9.	विभिन्न देशों में हिन्दी साहित्यकार और उनका साहित्य	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	43
10.	भाषा द्वारा मानव-विकास के उच्चतम आयाम-मोक्ष की प्राप्ति	डॉ. ममता स्नेही	47
11.	वर्तमान समाज की चुनौतियाँ एवं महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र	डॉ. मलिक राजेन्द्र प्रताप	51
12.	पर्यावरण समस्या और हमारा नैतिक दायित्व	डॉ. हरेती लाल मीना	54
13.	कविकुलगुरु कालिदास की सारस्वतश्री:का मकरन्द.....	डॉ. कृपाशंकर शर्मा	57
14.	आधुनिक जीवन में क्रियायोग का महत्व	आरती चौधरी	61
15.	श्रीगुरुग्रन्थसाहिब में संस्कृतमूलक शब्दों का प्रयोग	डॉ. दलबीर सिंह चाहल	64
16.	वैदिक प्रार्थनायें : आर्यावर्त के मानवीय-जीवन-प्रबन्धन के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. सलोनी	67
17.	भारतीय संस्कृति में आश्रम व्यवस्था	यशोदा सिंह	70
18.	समसमायिक परिप्रेक्ष्य में कौटिलीय अर्थशास्त्र की समीचीनता	डॉ. सुमन कुमारी	74
19.	भारतीय चिन्तन परम्परा में ज्ञान का स्वरूप	प्रवीण कुमार	77
20.	पृथिवीसूक्त में प्रतिपादित पृथिवी - संरक्षण एवं प्रार्थनाएँ	डॉ. सुशीला कुमारी	81
21.	बालमुकुंद गुप्त की हिन्दी पत्रकारिता	डॉ. अमित कुमार पाण्डेय, डॉ. संजय कुमार	86
22.	न्याय-वैशेषिकदर्शन में समाधि विचार विवेचन	किशोर कुमार	89
23.	भारतीय शास्त्रपरम्परा और पशुपालन	प्रो.नीरज शर्मा	92
24.	कालिदास का प्रजा संरक्षण एवं प्रकृति प्रेम	डॉ. मोहिनी अरोरा	96
25.	भीष्मस्तवराज वैदिक एकेश्वरवाद का प्रबल समर्थक	डॉ. गटुलाल पाटीदार, मनोहर लाल सुथार	100
26.	कोविड-19 के पश्चात् भविष्यगामी योजनाएं एवं कौशल विकास	डॉ. अर्चना चौहान	105
27.	'छल' पदार्थ विवेचन	विद्याप्रकाश सिंह	108
28.	प्राचीन व मध्यकाल की शिक्षा पर ज्योतिष का प्रभाव	डॉ. मंजू सिंह	111
29.	योग का पर्यावरण से सम्बन्ध एक विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ रजनी नौटियाल	113
30.	रचनात्मक आकलन का स्वरूप	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	116
31.	मूल्याङ्कन के सन्दर्भ में कक्षा शिक्षण की समीक्षा	डॉ. करुणाकर मिश्र	118
32.	वैशेषिकसूत्रोपस्कार के सन्दर्भ में 'आत्मवाद' की समीक्षा	ओम प्रकाश झा	122
33.	सट्टक परम्परा में कर्पूरमंजरी का महत्व	वरुण मिश्र	127
34.	वास्तुकला में द्वार निर्णय का शास्त्रीय स्वरूप	सीताकान्त कर	129
35.	महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन	अदिति	133
36.	'उत्तररामचरिते भवभूतिविशिष्यते' उक्ति की समीक्षा	नीतू	136
37.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं स्व-नियंत्रण....	प्रदीप सिंह थापली, डॉ. विभा लक्ष्मी	139
38.	शांखायण-ब्राह्मण में दर्शपौर्णमास-यज्ञ	कृष्णकान्त सरकार	145
39.	वर्तमान सन्दर्भ में ज्योतिष की उपयोगिता	नंदिनी चौबे	149
40.	प्राकृतिक आपदा एवं ज्योतिषशास्त्र	तपति तपन्विता महापात्र	151
41.	आचार्य अभिराजराजेंद्र मिश्र प्रणीत प्रशान्तराघव नाटक में.....	घनश्याम मीणा	153
42.	श्रीहनुमच्चरित्रवाटिका महाकाव्य में प्रकृति चित्रण और पर्यावरण शिक्षा	दयाशङ्कर शर्मा	155

ISSN 2278 - 0327

भारतीय शास्त्रपरम्परा और पशुपालन

प्रो. नीरज शर्मा
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
neeraj.sanskrit@gmail.com

भारत का पशुपालन में संसार में प्रथम स्थान है। यहाँ संसार की सर्वाधिक पालतू पशुओं की संख्या पाई जाती है। 2002-03 की गणना के अनुसार भारत में 48.5 करोड़ पशु थे। भारत में विश्व की कुल संख्या के 15 प्रतिशत गाय-बैल तथा 57 प्रतिशत भैंसे से मिलती है। भारत की 19वीं पशुधन गणना 2012 में सम्पन्न हुई जिसके अनुसार पशुओं की कुल संख्या 512.05 मिलियन है जो विगत संख्या से 3.33 प्रतिशत कम रही। गाय-भैंस आदि दुधारु पशुओं की संख्या 118.59 मिलियन है। देश की कुल पशुसम्पदा का एक तिहाई भाग 6 राज्यों-मध्यप्रदेश (10.27%) उत्तरप्रदेश (10.24%) आन्ध्र प्रदेश (8.01%) राजस्थान (6.98%) पश्चिमी बंगाल (8.65%) महाराष्ट्र (8.11%) में है। शेष दो तिहाई पशु संपदा भारत के 22 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में मौजूद हैं। गाय तथा बैल ग्रामीण भारतीय अर्थव्यवस्था तथा कृषि व्यवस्था की रीढ़ है। बैलों का उपयोग खेती में तथा गायों का दूध के लिए होता है। 2012 पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक गोवंश मध्यप्रदेश (20.42%) में हैं। तत्पश्चात् उत्तरप्रदेश (10.1%) महाराष्ट्र (8.8%) ओड़ीसा (7.50%) तथा राजस्थान (5.86%) में सर्वाधिक गोवंश पाया जाता है।[1]

भारतीय संस्कृति में पशुधन तथा समाज का गहरा सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है। अनेक देवी-देवताओं के साथ उनका सम्बन्ध मानकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाता हैं। गाय का कृषि एवं पोषण के लिए सर्वाधिक उपयोग जानकर उसके पालन-पोषण आदि के लिए सम्पूर्ण ज्ञान-अनुशासन स्थापित हुए तथा शास्त्र में सम्बन्धित विधि-विधान निर्दिष्ट किये गये।

'*पश्यति इति पशु:*' निर्वचन के आधार पर व्यापक अर्थ में दर्शन शक्ति प्राप्त सभी प्राणी पशु हैं अथवा शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति द्वारा देखे जाने के कारण 'पशु' कहलाये-

यदपश्यत् तस्मादेते पशव:।[2]

आकृति, रंगरूप एवं व्यवहार में समरूपता के आधार पर पशुओं को वर्गीकृत किया गया है। वैदिक साहित्य में द्विविध, त्रिविध, पंचविध तथा सप्तविध पशुओं का वर्णन प्राप्त होता है। द्विविध विभाजन में- ग्राम्य तथा आरण्य पशु आते हैं, त्रिविध में ग्राम्य, आरण्य तथा वायव्य पशु आते हैं-

पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये।[3]

अथर्ववेद में गाय, अश्व, पुरुष, अज तथा अवि (भेड़) ये पंचविध पशु कहे गये हैं-

तवेमे पञ्चपशवो विभक्ता गावो अश्वा: पुरुषा अजावय।[4]

ऐतरेय ब्राह्मण में सात प्रकार के पशु कहे गये हैं- अज, अश्व, गाय, महिषी, वराही, हस्ती तथा अश्वतरी (खच्चर)।[5]

वैदिक साहित्य में पशुओं के विशिष्ट लक्षणों के आधार पर पार्थिव, जलीय, दिव्य, मारुत, भयंकर, आग्रेय, गन्धमय आदि अन्य अनेक प्रभेद किये गये हैं। सभ्यता के प्रारंभ के साथ ही पशुधन का महत्त्व समझा गया एवं पशुधन विकास तथा प्रबन्धन को व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया। पशुपालन तथा कृषि का सम्बन्ध कृषि कर्म के प्रारंभिक दिन से ही चला आ रहा है। कृषि के साथ पशुपालन भी वार्त्ता का अंग रहा तथा विकसित सामाजिक अवस्था में यह आजीविका के महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में पहचाना गया। प्राचीन काल से ही भारत में कृषि एवं पशुपालन का आर्थिक समृद्धि में सर्वाधिक योगदान रहा है। पशुधन समृद्धि प्राचीन भारत में आर्थिक समृद्धि के आकलन का मानदण्ड हो गया था अत: पशुओं के पालन-पोषण, प्रजनन, स्वास्थ्य आदि विषयों पर स्वतन्त्र ज्ञान का अनुशासन भी विकसित हुआ, जिसमें गो-आयुर्वेद, हस्त्यायुर्वेद, शालिहोत्र या अश्वायुर्वेद आदि विशिष्ट विषय पल्लवित हुये। भारत में पशुओं के बिना कृषि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। शक्ति, उर्वरता, आदि कृषि आवश्यकताओं तथा आहार-पोषण आदि मानवीय आवश्यकताओं के संदर्भ में ग्रामीण भारत में आज भी पशुपालन जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में व्याप्त है।

संस्कृत वाङ्मय के शास्त्रीय साहित्य में गोवंश का अतिविस्तृत स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। महर्षि पराशर कहते हैं कि खेती, गाय, व्यापार, स्त्री तथा राजकुल की देखभाल में तनिक भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये -

कृषिर्गावो वणिग् विद्या: स्त्रियो राजकुलानि च।
क्षणेनैकेन सीदन्ति मुहूर्त्तमनवेक्षणात्॥[6]

गायों की सेवा करने वाला, अपने खेतों पर जाने वाला, कृषि काल-बीजसुरक्षा आदि में सावधान निरालस्य कृषक ही फसलों से समृद्ध होता है, कभी दुख नहीं पाता है -

गोहित: क्षेत्रगामी च कालज्ञो बीजतत्पर:।
वितन्द्र: सर्वशस्याढ्य: कृषको नावसीदति॥[7]

पराशर कहते हैं कि खेती में लगे पशुओं को कभी पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिये। पशुओं को पीड़ा पहुँचा कर उगाई गई फसल भी घृणित होती है।[8] पशुओं के पालन-पोषण में पूर्ण सावधानी रखनी चाहिये। गोशाला या पशुघर पक्का बना हो, साफ-सुथरा हो, गोबर-रहित रहे अर्थात् गोशाला में वातावरण शुद्ध होना चाहिए।[9] गोवंश को पुष्टिकर आहार देना चाहिये। गुड़, जौ का आटा तथा अन्य पोषण पदार्थ खिलाने, सांय तथा प्रात: चराने से तथा धुंआ करने से पशु कभी दुखी नहीं होते-

गुडकैयवसैधूमैस्तथान्यैरपि पोषणै:।
वाहा:क्वचित्न सीदन्ति सायं प्रातश्च चारणात्॥[10]

गोशाला के विषय में पराशर का मन्तव्य है कि वह पंचपदा (पांचपाद वाली) होनी चाहिये। ऐसा होने से गायों की वृद्धि होती है। सिंहस्थ सूर्य में निर्मित गोशाला गायों का नाश करती है अर्थात् शीघ्र संक्रामक हो जाती है-

पंचपदा तु गोशाला गवां वृद्धिकरी स्मृता।
सिंहगेहे कृता सैव गोनाशं कुरुते ध्रुवम्॥[11]

कांस्य धातु के पात्र, कांस्य बर्तन में भरा जल, गरम मांड, मछली का धोया पानी तथा रूई का शोधन गोशाला में रखना गायों के लिये विनाशकारी होता है। गोशाला में झाड़ू, मूसल, जूठन रखने तथा बकरियाँ बांधने से भी गायों का विनाश होता है। गोशाला में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रहे। जिस गोशाला में गायों के मूत्र से ही गोबर साफ होता हो वहाँ गायों के कल्याण की वृद्धि की आशा नहीं करनी चाहिए, अर्थात् सदैव शुद्ध जल से गोशाला का फर्श साफ करते रहे-

कांस्यं कांस्योदकं चैव तप्तमण्डं झपोदकम्।
कार्पासशोधनं चैव गोस्थाने गोविनाशकृत्॥
संमार्जनी च मुसलमुच्छिष्टं गोनिकेतने।
कृत्वा गोनाशमाप्नोति तत्राजबन्धनाद् ध्रुवम्॥
गोमूत्रजालकेनैव यत्रावस्करमोचनम्।
कुर्वन्ति गृहमेधिन्यस्तत्र का वाहवासना॥[12]

आचार्य काश्यप गायों तथा बैलों के शुभ लक्षणों तथा उनके पालन-पोषण के विषय में विवरण देते हैं। आकृति, रंग, रूप, पुष्टि, सींग, खुर, स्थूलत्व, कुकुद, नेत्र, रोमावली, आवर्त्त गति आदि के अनुसार दोषहीन पशुओं का वर्णन करते हैं। काश्यप ने गोवृषभ लक्षण कथन क्रम में गाय तथा बैल के शुभलक्षणों का वर्णन किया है। गोवंश न केवल अपने स्वामी या किसान के लिए अपितु पूरे देश के लिए कल्याणकारक होता है -

गावश्च वृषभश्चैव शुभलक्षणभासुरा:।
शुभदां स्वामिनां प्रोक्ता: देशक्षेमप्रदाश्च ते।।[13]

काश्यप ने रंगो, ऊँचाई आदि के आधार पर बैलों पर वर्गीकरण किया है। सामान्य रूप से वही बैल शुभ होता है जिसके दोनों सींग बराबर हो तथा अधिक बड़े या छोटे नहीं हो। सींगो की समानता वाला बैल शुभ माना जाता है। बैलों के खुर सुदृढ़, आकार में अतिदीर्घ या लघु न हो। सुन्दरचाल तथा लम्बी पूंछ वाले बैल शुभ होते हैं। बैल बहुत मोटा या दुबला नहीं होना चाहिए। वजन ले जाने की क्षमता तथा कार्य के समय प्रसन्नता के स्वभाव वाला होना चाहिए। जो बैल सुन्दर प्रकृति वाले, स्वस्थ, शुभरंग वाले, पीठ पर सुन्दर भंवरी वाले होते है वे धन-धान्य में वृद्धि करने वाले होते हैं। इसी प्रकार शरीर पर बारीक रोमावली वाले, गंभीर ध्वनि वाले, सुन्दर शरीर तथा आँखों वाले बैल शुभ होते हैं -

रम्यात्मानश्च हृष्टाश्च शुभवर्णसमुज्ज्वला:।
शुभावर्त्तादिसहिता: धनधान्यविवृद्धिदा।।
सूक्ष्मरोमावलीव्याप्ता: गंभीरनिनदाश्च ये।
मनोज्ञ नयनोपेता: वृषभा: शुभदा मता:।।[14]

खेती तथा पशुपालन के सनातन सम्बन्ध को दोहराते हुए निर्देश दिया है कि अपने कल्याण तथा कृषि कर्म में सफलता के लिए गुणवान-दोषहीन बैल, गाय आदि पशुओं का पालन-पोषण-संरक्षण करना चाहिए -

निश्चितान् दोषहीनांश्च वृषभादीन् शुभार्थिन:।
रक्षयेयु: प्रयत्नेन कृषिसाफल्यहेतवे।।[16]

खेती की सफलता बैल पर निर्भर थी अत: काश्यप ने 'वृषभराजपूजा' प्रसंग में बैल की स्तुति का विधान किया है। मनुष्य तथा पशु जगत के आत्मीय एवं कृतज्ञता पूर्ण भावों से भरी यह प्रार्थना भारतीय कृषि संस्कृति के अद्वितीय गौरव का प्रतीक

है जहाँ मनुष्य-भूमि-पशु एवं प्रकृति एक समान उपकार्योपकारक भाव के सम्बन्ध में बंधे हुए हैं। जुताई के पहले इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए कि हे सुरभिनन्दन! हे वृषभराज! अति प्रकाशमान्! निष्पाप! महाशक्ति को धारण करने वाले आप भूमि के कर्षण कार्य-जुताई में सहायता कीजिए। हे धर्माधार! सुगन्धित माला पुष्पादि से आपका पूजन करता हूँ। आप मुझे सुफल कीजिए। आपक खूब मंगल हो। अत्यन्त आदरपूर्वक आपके लिए समुचित आहार तथा जल-प्रदान करता हुआ पोषण करूँगा। शिव जी की कृपा से आप मेरे लिए सफलतादायी बनें। आप नित्य ही मेरे गोष्ठ में अपने समान वीर्यवान वत्सों को उत्पन्न करना, मैं सदा ही आदरपूर्वक आपका पोषण करूँगा। हे वृषराज! आप ही धन धान्य की समृद्धि के हेतु है। आप साक्षात् धर्म हैं। मैं आपका पोषण करूँगा। आप अपराध क्षमा करके मुझ पर अनुग्रह करें जिससे मेरे देवयज्ञ तथा भूतयज्ञ आपकी कृपा से सफल होवें -

सौरभेय महासार वृषराजामितद्युते।
भूकर्षणविधौ त्वं हि साह्यं कुरू ममानघ।।
सुगन्धमाल्यपुष्पाद्यैरद्य त्वां पूजयाम्यहम्।
फलदो भव मे त्वं तु धर्मकृत् स्वस्ति ते भृशम्।।
तृणै शष्पैश्च सलिलैः त्वां पोषयामहमादरात्।
शंकरानुग्रहात् त्वं तु फलदो भव मे सदा।।
उत्पाद्य तनयान् शश्वत् त्वत्तुल्य बलवीर्यवान्।।
अलंकुरु त्वं गोष्ठं मे त्वां पोषयाम्यहमादरात्।।
वृषराज त्वमेवात्र धनधान्यादिवृद्धिकृत्।
धर्मरूप त्वमेवेह तस्मात् त्वां पोषयाम्यहम्।।
देवयज्ञं भूतयज्ञं यथा मे सफलं भवेत्।
तथा दयां कुरु त्वं तु चापराधं क्षमस्व मे।।
इति सम्प्रार्थ्य वृषभं पूजयित्वा विशेषतः।।[16]

भारत के स्वर्णिम सांस्कृतिक तथा समृद्ध आर्थिक इतिहास में कृषिकर्म को धुरीण सौरभेय साक्षात् धर्म स्वरूप जिस बैल का ऐसा स्तवन किया गया है वह आज केवल निरीह पशु है। बैल आकिंकरचक्रवर्ती सम्राट समस्त प्रजाओं के अन्नदाता किसानों का भी उपास्य-पूज्य-फलप्रदाता-योगक्षेमकर्त्ता सहयोगी है। वर्तमान कृषि व्यवस्था ने बैलों को विकास का अवरोधक घोषित करके इसे आवारा पशु, भूख-प्यास-दुत्कार से बेहाल बनाया है। इस कृषि व्यवस्था ने बैलों के पीछे-पीछे कुछ कालावधि में ही किसानों को भी कंगाली, बेचारगी तथा आत्महन्ताओं की कोटि में पहुँचा दिया है। एक गंम्भीर संवाद भारतीय संस्कृति तथा विकास की तीव्र गति वाले अर्थशास्त्रियों के बीच आवश्यक है। किसानों के पीछे-पीछे पूरा समाज तथा देश भी गंम्भीर असाध्य रोगों से ग्रसित होकर कर शनैः शनैः उसी दिशा में अग्रेसर है।

भारतीय परम्परा में धर्मशास्त्र तथा कृषिशास्त्र के आचार्यों ने बैलों से अत्यधिक थकान पर्यन्त कार्य करवाने का स्पष्ट निषेध किया है। काश्यप कहते हैं -

श्रान्ता यथा ते न क्लान्तास्तावत्तत्कार्यमीरितम्।[17]

यदि बैल प्रसन्न नहीं है तो खेती निष्फल समझनी चाहिए। थके हुए बैलों को कभी भी कृषिकर्म में नहीं लगाना चाहिए। काश्यप का यह मत अत्यन्त विचारणीय है-

तन्मनः क्लेशहेतुस्तु विफलाय विनिश्चितः।
तस्मान्न योजयेच्छ्रान्तान् वृषभान् कृषिकर्मणि।।

महर्षि पराशर ने पराशर स्मृति में बैलों के काम की अवधि सुनिश्चित की है। आठ बैलों से युक्त हल को धर्मसम्मत माना गया है। छह बैल वाले हल को मध्यम तथा चार बैल वाले हल के स्वामी को नृशंस कहा गया है। यदि हल के साथ दो ही बैल हैं तो वह बैलों के लिए घातक होता है -

हलमष्टगवं धर्म्यं षड्गवं मध्यमं स्मृतम्।
चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनम्।।[18]

एक हल के साथ बैलों की कार्यावधि

बैल	कार्यरत	कार्यावधि	विश्राम	स्थिति
आठ	दो	दो घंटे	छह घंटे	उत्तम धर्मसम्मत
छह	दो	ढाई घंटे	साढे पांच घंटे	मध्यम
चार	दो	चार घंटे	चार घंटे	नृशंस
दो	दो	आठ घंटे	शून्य	घातक

पराशर कहते हैं कि भूखे, प्यासे, थके हुए बैल को कभी भी हल में नहीं जोतना चाहिए। हीनांग, बीमार तथा क्लीब बैल को कभी भी गाड़ी में नहीं जोतना चाहिए। -

क्षुदितं तृषितं श्रान्तं बलीवर्दं न योज़येत्।
हीनांगं व्याधितं क्लीबं वृषं विप्रो न वाहयेत्।।[19]

स्थिर अंगो वाले, नीरोग, शक्तिवान् तथा बधिया नहीं किए हुए बैल को केवल आधे दिन के लिए ही गाड़ी में जोता जा सकता है।[20]

कृषि पराशर में भी स्पष्ट निर्देश है कि खेती ऐसी करनी चाहिए जिसमें जुताई में लगे पशुओं को कभी पीड़ा नहीं पहुँचे। बैलों को पीड़ा पहुँचा कर उत्पन्न की गई फसल का अन्न समस्त कार्यों में घृणित व अग्राह्य माना गया है। यदि बैलों का उत्पीड़न करके चौगुनी फसल भी प्राप्त हुई हो तो वह भी बैलों की 'हाय' से शीघ्र नष्ट होती है -

कृषिं च तादृशीं कुर्याद्यथा वाहान्न पीडयेत्।
वाहपीडार्जितं शस्यं गर्हितं सर्वकर्मसु।।
वाहपीडार्जितं शस्यं फलितं च चतुर्गुणम्।
वाहनि:श्वासवातेन तद् द्रुतं च विनश्यति।।[21]

काश्यप ने सुलक्षणसम्पन्न बैल, गाय, भैंस, भेड़, बकरी का संग्रह करने का निर्देश दिया है। ये सभी कृषि कार्य में फलप्रदायक हैं-

दोषहीना गुणोपेता वृषभा: शुद्धजातिजा:।
संग्राह्या क्षेमसिद्धयर्थं कृषिकारैर्विशेषत:॥
सुलक्षणा धेनवश्च महिषाश्च तथा मता:।
महिष्यश्च बहुक्षीरा: रक्षणीया: कृषिवलै:॥
मेषाश्छागाश्च बहुधा कृषिकार्यफलप्रदा:।
परंपरोपदेशेन परिक्षास्वपि पण्डितै:॥[22]

काश्यप कहते हैं कि पशुओं को समय से हितकर आहार प्रदान करना चाहिये, उनका निरन्तर लालन करते हुये रोगों से उनकी रक्षा करनी चाहिए।[23] गोष्ठ स्थान या गोशाला पुष्टिप्रद होनी चाहिये। गायों को सर्वत्र पालना चाहिये। सर्वत्र उनकी रक्षा की जानी चाहिये। तृण-पलाल नीर आदि से पोषण तथा विभिन्न ऋतुओं में ध्यान रखना चाहिये। बकरी-भेड़ आदि सभी पशुओं को ग्रीष्मकाल में मध्याह्न में छाया में रखना चाहिये, गर्मी से पशुओं का बचाव करना चाहिये।

छायासु ताश्च छागवृषमाद्या: क्रियाकरा:।
मध्याह्नकाले ग्रीष्मे तु स्थाप्या रक्ष्याश्च धीमता॥[24]

आचार्य कौटिल्य ने 'गो अध्यक्ष' प्रसंग में पशुपालन के प्रशासनिक ढांचे का विधान किया है। राज्य में गाय, भैंस आदि पालतू पशुओं की देख-रेख करने वाले अधिकारी का कर्तव्य निर्धारण करते हुए कहा कि उसके लिए वेतनीय ग्राहिक, करप्रतिकर, भग्नोत्सृष्टक, भागानुप्रविष्टक, व्रजपर्यग्र, नष्ट, विनष्ट तथा क्षीरघृत संजात इन आठ विषयों की पूर्ण जानकारी आवश्यक है। अर्थशास्त्र में आचार्य कौटिल्य ने गायों की देखभाल के नियम प्रशस्त किये हैं। बछड़े, बीमार तथा वृद्ध पशुओं की देखभाल-परिचर्या का विधान किया है। गोपालक के लिए गोचारण में सावधानी योग्य सलाह अर्थशास्त्र में दी गई है। कौटिल्य का निर्देश है कि श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष तथा पौष माह में गाय-भैंसों को दोनों समय दुहना चाहिए जबकि, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ तथा आषाढ़ में केवल सांयकाल ही दुहना चाहिए-

बालवृद्धव्याधितानां गोपालका: प्रतिकुर्यु:।
समव्यूढतीर्थमकर्दममग्राहमुदकमवतारयेयु: पालयेयुश्च।
वर्षा शरद्धेमन्तानुभयत: कालं दुह्या:।
शिशिरवसन्तग्रीष्मानेककालम्।।

कौटिल्य का स्पष्ट आदेश है कि निषिद्ध महिनों में गाय-भैंस को दोनों समय दूहने वाले व्यक्ति का अंगूठा काट देना चाहिए।[25]

द्वितीयकाले दोग्धुरङ्गुच्छेदो दण्ड:।

कौटिल्य ने बैल, गाय, ऊँट आदि के समुचित आहार के माप-तौल एवं पदार्थों का भी उल्लेख किया है। हरी घास, भूसा, सानी, नामक, तेल, उड़द, जौ, गुड़, सोंठ आदि की उचित मात्राएँ पशु आहार के लिए विहित की गई है। पशुओं की बाड़े में मादा तथा नर पशुओं के उचित अनुपात का भी विधान किया है।

संस्कृत कृषि का दर्शन कृषि-पशुपालन एवं प्रकृति के साथ किसान के गहनतम अन्त:संबन्धों को पुष्ट करता है। प्रकृति के संतुलन में मानव श्रम के साथ-साथ पशुधन की सहभागिता वैदिक कृषि का वैशिष्ट्य है। कृषि के लिये गायों के गोबर की उपयोगिता को समझकर ही वैदिक ऋषि कहते हैं-

संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन्गोष्ठे करीषिणी:।
बिभ्रती: सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन॥
इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत।
इहैवोत प्रजायध्वं मयि संज्ञानमस्तु व:।
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत।
इहैवोत प्रजायध्वं मया व सं सृजामसि॥
मया गावो गोपतिनासचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णु:।
रायस्पोषेण बहुलाभवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुच्चै व: सदेम॥[26]

ऋषि ब्रह्मा गोवंश का स्तवन करते हुये कहते हैं कि 'हे गौओ! हम आपको सुखपूर्वक बैठने योग्य गोशाला, जलादि समृद्धि से युक्त करते हैं। अर्यमा, पूषा, बृहस्पति, इन्द्रादिदेवता आपको उत्पन्न करें, आपके क्षीर घृतादि ऐश्वर्य से हमें पुष्ट करें। चिरकाल तक अपने वंश के साथ आप यहीं रहें तथा स्वस्थ रहें एवं हमारे लिये सौम्य-मधुर-दुग्ध तथा गोबर पैदा करती रहें। इस गोशाला में आपका अतिशीघ्र वंश विस्तार हो, आप हमसे प्रेम करें तथा कभी भी हमें त्याग कर नहीं जाये। आपके वंश में चिरकाल तक असीमित वृद्धि हो, आपके साथ हमें भी दीर्घायु प्राप्त हो।'

भारतीय परम्परा में सर्वत्र वेद, पुराण तथा शास्त्रीय साहित्य में पशुधन-गोधन का माहात्म्य वर्णित है। व्यक्ति तथा समाज का पोषण, स्वास्थ्य, भूमि का पोषण तथा स्वास्थ्य, कृषिजन्य उत्पादों

(शेष पृष्ठ-99 पर..)

(पृष्ठ-95 का शेष.....)

के आधार पर चलने वाले व्यापार-उद्योग धंधे, पर्यावरण का स्वास्थ्य आदि महान् प्रयोजनों को अपने आश्रय से पूर्ण करने वाला गोवंश निश्चय ही उपर्युक्त गुणानुवाद, स्तुति-वंदना तथा पूजा प्रतिष्ठा का अधिकारी हैं। समग्र प्रक्रिया आदान-प्रदान के सम्बन्ध पर टिकी है। न्यूनतम निर्वाह पदार्थ मात्र का ग्रहण करके सम्पूर्ण समष्टि का परिपालन करने के कारण गाय को माता का सम्मान किया जाना अत्यन्त तार्किक एवं न्यायोचित है। भारतीय परम्परा वैज्ञानिक सत्य को धर्म एवं विश्वास के साथ आचरण योग्य बनाती है।[27]

1. 19 वीं पशुगणना 2012, पृ. 22, कृषि पशुपालन मंत्रालय, भारत सरकार
2. शतपथ ब्राह्मण 6.2.1.2
3. ऋग्वेद 10.90.8, यजुर्वेद 31.6, अथर्ववेद 19.6.14
4. अथर्ववेद 11.2.9
5. ऐतरेय ब्राह्मण 2.17
6. कृषिपराशर 82
7. कृषिपराशर 83
8. कृषिपराशर 84-85
9. कृषिपराशर 87
10. कृषिपराशर 86
11. कृषिपराशर 89
12. कृषिपराशर 90-92
13. काश्यपीयकृषिसूक्ति 287
14. काश्यपीयकृषिसूक्ति 297-298
15. वही 306
16. काश्यपीयकृषिसूक्ति 279-285
17. काश्यपीयकृषिसूक्ति 285
18. पराशरस्मृति, गृहस्थ धर्म 67
19. पराशरस्मृति, गृहस्थ धर्म 68
20. वही, 69
21. कृषिपराशर 84-85
22. काश्यपीयकृषिसूक्ति 303-305
23. वही, 307
24. वही, 318
25. अर्थशास्त्र 2.45.29
26. अथर्ववेद 3.14.4-6
27. संस्कृत कृषिशास्त्र; प्रो. नीरज शर्मा, लिटरेरी सर्किल, जयपुर 2011